Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

चित्तौड़गढ़ दुर्ग का चक्रस्वामिन मंदिर

शंकरबाई मीना*

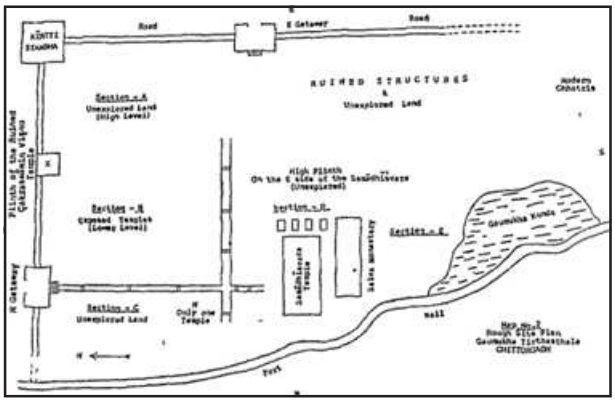
* शोधार्थी (इतिहास) संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.) भारत

शोध सारांश – इस लेख में चित्तौड़गढ़ दुर्ग में अवस्थित विजयस्तम्भ के समीप पश्चिमाभिमुखी चक्रस्वामिन विष्णु मंदिर के स्थापत्य तथा मूर्तिकला के बारे में शोध किया गया है, जो शास्त्रीय दृष्टिकोण से अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। मंदिर योजना में एक तारे की आकृति का है, जो चक्र के समान है, इसलिए इस मंदिर को चक्रस्वामिन मंदिर नाम दिया गया है। स्थापत्य की दृष्टि से इसे तलछन्द व उर्ध्वछन्द में बांटा जा सकता है। मंदिर वर्तमान में खण्डितावस्था में है, जिसमें गर्भगृह का उत्तर तथा पूर्वी भाग शेष है, तथा पश्चिमाभिमुखी इस मंदिर का अलंकृत प्रवेशद्वार है, जिसमें ललाटबिम्ब व उत्तरंग भाग भग्नावस्था में किन्तु उदुम्बर व द्वारशाखाएं स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जंघा भाग की प्रतिमाओं में भगवान विष्णु के व्यूहों की मूर्तियों के होनें से यह मंदिर वैष्णव धर्म से संबंधित माना गया है। मंदिर के गर्भगृह प्रवेशद्वार के बांयी ओर एक अभिलेख से इस मंदिर की ऐतिहासिकता सिद्ध होती है।
शब्द कुंजी – चक्रस्वामिन मंदिर, तलछन्द, उर्ध्वछन्द, उदुम्बर, ललाटबिम्ब, द्वारशाखाएं, जंघा, वेदीबंध, व्यूह, अभिलेख।

प्रस्तावना – यह मंदिर चित्तौड़गढ़ दुर्ग में प्रसिद्ध कीर्तिस्तम्भ के पश्चिम में तथा गौमुख तीर्थस्थल के उत्तरी प्रवेशद्वार के पूर्व में स्थित है। अर्थात् कीर्तिस्तम्भ व गौमुख तीर्थस्थल के मध्य में ऊंची जगती पर बना हुआ है, जो वर्तमान में खण्डितावस्था में है। वर्तमान में इस मंदिर में केवल पूर्वी व उत्तरी वेदीबंध व मंडोवर भाग ही शेष है, दक्षिणी भाग खण्डितावस्था में तथा पश्चिम की ओर मंदिर का प्रवेशद्वार है, जिसमें ललाटबिम्ब व उत्तरंग भाग नहीं है, किन्तु दोनों ओर की द्वारशाखाएं व उदुम्बर भाग शेष है, जो अत्यंत ही अलंकृत है।इस मंदिर में विष्णु के चौबीस व्यूह मूर्तियों में से तीन की मधुसूदन देव, माधव देव तथा अनुरूद्ध देव की प्रतिमाएं जंघा भाग में है, तथा जंघा भाग के उत्तर-पूर्वी कर्णरथ में त्रलौक्यमोहन की बीस भुजाओं से युक्त प्रतिमा है, जो इस मंदिर को स्पष्टत: विष्णु मंदिर सिद्ध करती है।

गर्भगृह के पास वि. सं. 1327 का एक लघुलेख[1], जिसमें आल्हा काबरा के पुत्र रतना का नाम है, संभवत: इसे आल्हा काबरा के पुत्र रतनाश्रेष्ठि द्वारा बनाया गया था। मंदिर का कुछ ही भागशेष है, जिन पर लगी प्रतिमायें यह सिद्ध करती है कि यह किसी समय अच्छा अलंकृत रहा होगा।

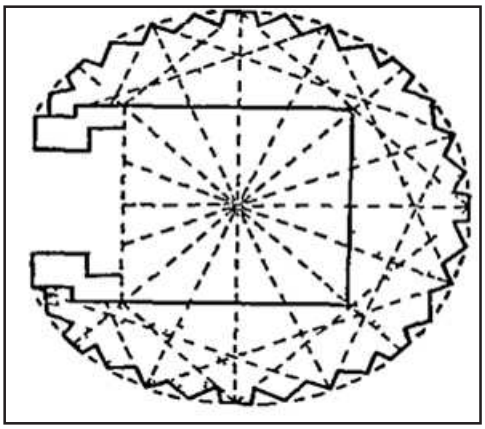
आर. नाथ[2] के अनुसार इसका समय-समय पर जीर्णोद्धार करवाया गया था, अंतिम बार 15वीं शताब्दी ईस्वी में, जैसा कि कुछ बाद की देवांगना प्रतिमाओं से प्रतीत होता है। अंतत: इसके परित्याग किये जाने तक इसके मूलस्वरूप को लगभग 10वी शताब्दी ईस्वी का माना जा सकता है। यह वहीं चक्रस्वामिन विष्णु मंदिर है, जिसका उल्लेख वेद शर्मा ने आबू के अचलेश्वर शिलालेख में समाधिश्वर मंदिर के साथ किया गया है। दोनों एक-दूसरे के पास स्थित थे और आपस में घिरे हुए थे। इसकी अत्यंत जटिल तारामंडलीय संरचना अर्थात् चक्र योजना, जिसके लिए ज्यामितीय अनुक्रमों का गहन ज्ञान आवश्यक था, इस दावे की पुष्टि करता है।



चित्र संख्या- 1 आर. नाथ की पुस्तक एएण्टिक्वीटीज ऑफ चित्तौड़गढ . से लिया गया लेआउट

मंदिर की स्थापत्य कला – मूलप्रासाद में केवल पीठ तथा मंडोवर भाग ही वरंडिका तक शेष रहा है। शिखर अब मौजूद नहीं है, भिट्ट काफी सादा है, यहां तक की ग्रासपट्टी तथा थर जैसी पारम्परिक नक्काशी भी मौजूद नहीं है। मंडोवर में वेदीबंद तथा जंघा का सामान्य विभाजन है, जिनमें अलंकरण सामान्य है, सिवायरथिकाओं के, जिनमें वेदीबंध में आसन पर बैठे हुए देवता तथा जंघा में स्थानक खड़े हुए देवता है। ये मूर्तियां अत्यन्त उत्कृष्ट ढंग से बनाई गई है और ये मूलप्रसाद के बाहरी हिस्से की सादगी को संतुलित करती है।मंदिर पश्चिमाभिमुखी है, वर्गाकार गर्भगृह का आंतरिक भाग हमेशा की तरह काफी सादा है, किन्तु द्वारशाखा (चौखट) पर सुन्दर नक्काशी की गयी है, इसे अत्यंत अलंकृत रूप से तैयार किया गया है। निचले हिस्सों को प्रतिहारों से सुसज्जि किया गया है। देवांगनाओं (हिन्दु मंदिर की अलंकरण कला से जुड़ी चंचल युवतियाँ) का अलंकरण और देवी देवताओं के साथ-साथ मंदिर कला के ऐसे पारम्परिक रूपांकनों जैसे-कीर्तिमुख, कलश, लहर वल्लरीव श्रीवत्स व पद्म का उपयोग किया गया है। यह सुंदर द्वारशाखा सादे मूलप्रासाद की विल्कुल विपरित है। मूर्तियाँ मुख्यत: वैष्णव शैली की है, और

ऐसा प्रतीत होता है कि इसे किसी शास्त्रीय रूप में विष्णु पूजा के लिए समर्पित किया गया था।[3]



चित्र संख्या–2 आर. नाथ की पुस्तक यएण्टिक्वीटीज ऑफ चित्तौड़गढ . से ली गयी मंदिर योजना



चित्र संख्या–4 उत्तर–पूर्वी दिशा से लिया गया फोटो



चित्र संख्या–5 पश्चिमी दिशा से लिया गया फोटो

गर्भगृह का प्रवेशद्वार– उदुम्बर में कमलनालों से अलंकृत मंदारक तथा उसके दोनों ओर गागरक के रूप में सुन्दर कीर्तिमुख बने हुए है। मंदारक के सामने पद्मपुष्पों से अलंकृत अर्द्धचन्द्रशिला बनी हुयी है। पेड्या भाग में नदी देवियों के अतिरिक्त द्वारपाल तथा परिचर–परिचारिकाओं की प्रतिमाएं है। प्रवेशद्वार के दांये नीचे की ओर लघुताख में अर्द्धपर्यकासीन गणेश प्रतिमा बनी हुई है,जिसकी दांयी अंक में देवी विराजमान है। जबकि बांयी ओर एक और युगल प्रतिमा अर्द्धपर्यंकासीन मुद्रा में बैठी हुई है। प्रवेशद्वार के बांयी ओर एक लेख उत्कीर्ण किया गया है। ललाटबिम्ब व उत्तरंग भाग नष्ट हो चुका है। प्रवेशद्वार पंचशाखा युक्त है। प्रथम शाखा कमलनालों की पंक्ति से अलंकृत, द्वितीय व चतुर्थ शाखा ज्यामितीय आकृतियों से अलंकृत, तृतीय रूपस्तम्भ शाखा, जिसमें पेड्या भाग में द्वारपाल, इसके उपर चतुर्भुजी देव संभवत: ईशान, मालाधारी विद्याधर, हंसयुगल, कीर्तिमुख, कलश उत्कीर्ण किए गये है।[4]



चित्र संख्या–6 प्रवेशद्वार के दांयी ओर अवस्थित शिलालेख





चित्र संख्या–7 प्रवेशद्वार का दांया व बांया भाग

मंदिर की मूर्तिकला

जंघा भाग में अवस्थित प्रतिमाएं–

उत्तर पूर्वी भाग

त्रैलौक्यमोहन की स्थानक प्रतिमा[5]–कीर्तिस्तम्भ की ओर विष्णु के त्रैलौक्यमोहन का स्थानक रूप में दर्शाया गया है, त्रिमुखी, जिसकी 20 भुजाएं हैं, जो विविध आयुध धारण किए हुए है, बांयी भुजाओं में ढाल, चक्र, पाश, धनुष, पुस्तक, कलश, शंख इत्यादि आयुध धारण किए हुए है, जबकि दांयी भुजाओं में नीचे से वरद, फल, वज्र, पुस्तक, तीर, गदा इत्यादि आयुध धारण किए हुए है, दो भुजाएं वक्षस्थल के सामने व्याख्यान मुद्रा में अक्षमाला धारण किए हुए है। प्रतिमा के दांयी तथा बांयी ओर दो–दो आयुध पुरूषों की प्रतिमा है। जो त्रिभंग मुद्रा में वस्त्राभूषणों से सुशोभित खड़ी हुई, एक भुजा में आयुध पकड़े हुए तथा दूसरी कट्यावलम्बित मुद्रा में उत्कीर्ण की गयी है।

उत्तरी भाग

मधुसुदन देव की प्रतिमा[6]– यह प्रतिमा मंदिर की उत्तरी भद्रताख में स्थानक मुद्रा में अवस्थित है। चतुर्भुजी, किरीट मुकुट, वनमाला तथा वस्त्राभूषणों से सुशोभित यह प्रतिमा विष्णु के चौबीस मूर्तियों के व्यूहों में से एक मधुसूदन देव की प्रतिमा है, जिसकी भुजाओं में चक्र, शंख, पद्मनाल व गदा धारण किए हुए है। प्रतिमा के दांयी तथा बांयी ओर दो–दो आयुध पुरूषों की प्रतिमा है। जो वस्त्राभूषणों से सुशोभित त्रिभंग मुद्रा में खड़ी हुई, एक भुजा में आयुध पकड़े हुए तथा दूसरी कट्यावलम्बित मुद्रा में उत्कीर्ण की गयी है।



चित्र संख्या–8 त्रैलोक्य मोहन की प्रतिमाचित्र संख्या–9 मधुसूदन देव की प्रतिमा

उत्तर–पश्चिमी भाग–

माधव देव की प्रतिमा[7]**–**यह प्रतिमा मंदिर की उत्तर–पश्चिमी कर्णताख में स्थानक मुद्रा में अवस्थित है। चतुर्भुजी, किरीट मुकुट (खण्डित), वनमाला तथा वस्त्राभूषणों से सुशोभित यह प्रतिमा विष्णु के चौबीस मूर्तियों के व्यूहों में से एक **माधव देव** की प्रतिमा है, जिसकी भुजाओं में गदा, चक्र, शंख व पद्मनाल धारण किए हुए है। प्रतिमा के दांयी तथा बांयी ओर दो–दो आयुध पुरूषों की प्रतिमा है। जो वस्त्राभूषणों से सुशोभित त्रिभंग मुद्रा में खड़ी हुई, एक भुजा में आयुध पकड़े हुए तथा दूसरी कट्यावलम्बित मुद्रा में उत्कीर्ण की गयी है।

पूर्वी भाग

अनुरूद्ध देव की प्रतिमा[8]**–** यह प्रतिमा मंदिर की दक्षिण पूर्वी भाग की कर्णताख में स्थानक मुद्रा में अवस्थित है, जिसका मुख खण्डित है। चतुर्भुजी, मुकुट, वनमाला तथा वस्त्राभूषणों से सुशोभित यह प्रतिमा विष्णु के चौबीस मूर्तियों के व्यूहों में से एक मधुसूदन देव अनुरूद्ध देव की प्रतिमा है, जिसकी भुजाओं में चक्र, गदा, शंख व पद्मनाल धारण किए हुए है। प्रतिमा के दांयी तथा बांयी ओर दो–दो आयुध पुरूषों की प्रतिमा है। जो वस्त्राभूषणों से सुशोभित त्रिभंग मुद्रा में खड़ी हुई, एक भुजा में आयुध पकड़े हुए तथा दूसरी कट्यावलम्बित मुद्रा में उत्कीर्ण की गयी है।



चित्र संख्या–10 माधव देव चित्र संख्या–11 अनिरूद्ध देव

उत्तरी कपिली भाग में अवस्थित प्रतिमा–

चतुर्भुजी देवी एकानंशा[9] **की प्रतिमा**–मूर्तिकला में एकानंशा महत्वपूर्ण व प्राचीन देवी, जिन्हें मुख्य रूप कृष्ण व बलराम की बहन के रूप में पूजी जाती है, इन्हें भगवान विष्णु की मायावी (योगमाया) शक्ति का स्वरूप माना जाता है।

यह प्रतिमा मंदिर की उत्तरी कपिली ताख में अवस्थित है। किरीट मुकुट, वनमाला तथा वस्त्राभूषणों से सुशोभित चतुर्भुजी इस देवी की भुजाओं में क्रमश: वरदाक्ष, कमलनाल, पुस्तक व बिजौरा फल धारण किए हुए है।देवतामूर्तिप्रकरण पुस्तक में बिजौरा फल के स्थान पर वरद मुद्रा बताया गया है। ताख के दोनों ओर शृगाल उत्कीर्ण है, तथा दांयी नीचे की ओर एक अंजलिबद्ध आकृति बैठी हुई उत्कीर्ण की गयी है।

कुम्भक लघुताख में अवस्थित प्रतिमाएं–

पूर्वी भाग

गरूड़ारूढ़ लक्ष्मीनारायण की प्रतिमा– यह प्रतिमा अर्द्धपर्यंकासीन विष्णु, जिसकी अंक में बांयी ओर लक्ष्मी विराजमान है। विष्णु की उपरी भुजाओं में गदा तथा चक्र धारण किए हुए है, जबकि निम्न बांयी भुजा लक्ष्मी की प्रतिमा के पीछे होते हुए कटि पर रखा हुआ है, जबकि दांयी भुजा खण्डित है। वस्त्राभूषणों से सुशोभित यह प्रतिमा गरूड़ पर विराजमान है। ताख का उपरी भाग कीर्तिमुख व कमलनालों से अलंकृत है।[10](देखिये चित्र संख्या 16)

उत्तर पूर्वी भाग–

चतुर्भुजी देवी प्रतिमा– यह प्रतिमा जंघा भाग की प्रतिमा त्रैलौक्यमोहन की प्रतिमा के नीचे है। अर्द्धपर्यंकासीन यह प्रतिमा करण्ड मुकुट व वस्त्राभूषणों से सुशोभित इस प्रतिमा की भुजाओं में क्रमश: वरद, त्रिशूल, वज्र व कमण्डलु धारण किए हुए है। ताख का उपरी भाग कीर्तिमुख व कमलनालों से अलंकृत है। प्रतिमा के नीचे वाहन उत्कीर्ण किया गया है, किन्तु अस्पष्ट है।[11] (देखिये चित्र संख्या 15)

उत्तरी भाग–

चतुर्मुखी ब्रह्मा व ब्रह्माणी की युगल प्रतिमा–पूर्वी कुम्भक भाग में अवस्थित यह प्रतिमा अर्द्धपर्यंकासीन मुद्रा में है। चतुर्भुजी, चतुर्मुखी ब्रह्मा, जिसके तीन मुख दिखाई दे रहे है, एक मुख पश्च भाग में, लम्बोदर, सिर पर जटामुकुट धारण किए हुए, जिसकी दांयी भुजाओं में वरदाक्ष, कमल तथा बांयी भुजा ब्रह्माणी के बांयी अंक में होने से दिखायी नहीं दे रही। प्रतिमा के बांयी नीचे की ओर हंस की आकृति उत्कीर्ण की गयी है। यह प्रतिमा मकरप्रणाल के उपर अवस्थित है। ताख का उपरी भाग कमलनालों व कीर्तिमुख से अलंकृत है।[12](देखिये चित्र संख्या 13)



चित्र संख्या–12 देवी एकानंशा की प्रतिमा
चित्र संख्या–13 ब्रह्मा की युगल प्रतिमा
चित्र संख्या–14 चतुर्भुजी देवी प्रतिमा
उत्तर–पश्चिमी भाग

चतुर्भुजी देवी प्रतिमा –करण्ड मुकुट व वस्त्राभूषणों से सुशोभित यह प्रतिमा चतुर्भुजी है, जो अर्द्धपर्यंकासीन मुद्रा में बैठी हुई है। [13](देखिये चित्र संख्या 17)

कपिली कुम्भक भाग में अवस्थित चतुर्भुजी देवी प्रतिमा– कमण्डलु, गदा, ढाल व बिजौरा धारण किए हुए चतुर्भुजी यह प्रतिमा अर्द्धपर्यंकासीन मुद्रा में सिंह पर विराजमान है। ताख का ऊपरी भाग कमलनालों से अलंकृत है।[14] (देखिये चित्र संख्या 18)



चित्र संख्या–15 चतुर्भुजी देवी प्रतिमा
चित्र संख्या–16 लक्ष्मीनारायण



चित्र संख्या–17 चतुर्भुजी देवी **चित्रसंख्या–18 चतुर्भुजी देवी**

निष्कर्ष:–चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर बहुत काम हुआ है, किन्तु कुछ विशेष स्थापत्य पर ही ज्यादा ध्यान दिया गया है, जैसे–कुम्भा महल, विजयस्तम्भ, कुम्भस्वामिन व मीरा मंदिर, समिधेश्वर मंदिर, कालिका माता मंदिर, जैन कीर्तिस्तम्भ इत्यादि। लेकिन इनके अतिरिक्त भी दुर्ग में बहुत सारे ऐसे मंदिर है जिनपर काम नहीं हुआ है या बहुत संक्षिप्त रूप में हुआ है। ऐसा ही एक मंदिर चक्रस्वामिन मंदिर, जो स्थापत्य व मूर्तिकला की दृष्टि से बेजोड़ है, तलछन्द स्थापत्य में गर्भगृह, गर्भगृह का अलंकृत प्रवेशद्वार, तथा अंतराल भाग, जिसमें केवल उत्तरी दिशा का भाग ही शेष है। उर्ध्वछन्द में उर्ध्वछन्द में भिट्ट, जाड्यकुम्भ, कर्णिका, कपोताली, खुर, कुम्भक, कलश, अंतराल, कर्णिका, जंघा, उद्गम व छाद्य भाग है। मंदिर योजना में एक चक्र की भांति बना हुआ है, जो संभवत: शास्त्रीय दृष्टिकोण से बनाया गया है। मूर्तिकला की दृष्टि से भी यह मंदिर महत्वपूर्ण है, इस मंदिर में जंघा भाग तथा वेदीबंध भाग की रथिकाओं में प्रतिमाएं बनाई गयी है। इसके अतिरिक्त प्रवेशद्वार में भी विभिन्न प्रतिमाएं उत्कीर्ण की गयी है। इस लेख में चक्रस्वामिन मंदिर स्थापत्य व मूर्तियों के विवेचन की दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. सोमानी, रामवल्लभ, 'वीरभूमि चित्तौड़गढ़' (शांतिदेवी मातेश्वरी प्रकाशन, भीलवाड़ा, 1969) पृ. 192., देखिए चित्र संख्या 6.
2. आर. नाथ, 'एण्टिक्वीटीज ऑफ चित्तौड़गढ' (द हिस्टोरिकल रिसर्च डाक्यूमेंटेशन प्रोग्राम, जयपुर, 1984) पृ. 12
3. वही पृ. 12,13.
4. चक्रस्वामिन विष्णु मंदिर का पश्चिमी भाग, देखिये चित्र संख्या 7 (प्रवेशद्वार का दांया व बांया भाग)
5. सोमानी, पूर्व निर्दिष्ट, पृ. 192.
6. सूत्रधार मण्डन, अनुवादक श्रीकृष्णजुगनूब देवतामूर्तिप्रकरण, प्राकृत भारती एकेडमी, जयपुर, 1999, पृ. 105
7. वही पृ. 105
8. वही, पृ. 105
9. वहीं पृ. 141,142.
10. चक्रस्वामिन विष्णु मंदिर के मंडोवर भाग की पूर्वी कुम्भक रथिका, देखिये चित्र संख्या 16.
11. चक्रस्वामिन विष्णु मंदिर के मंडोवर भाग की दक्षिण–पूर्वी कुम्भक रथिका, देखिये चित्र संख्या 15
12. चक्रस्वामिन विष्णु मंदिर के मंडोवर भाग की उत्तरी कुम्भक रथिका, देखिये चित्र संख्या 13
13. चक्रस्वामिन विष्णु मंदिर के मंडोवर भाग की उत्तर–पश्चिमी कुम्भक रथिका, देखिये चित्र संख्या 17
14. चक्रस्वामिन विष्णु मंदिर के कपिली भाग की उत्तर–पश्चिमी कुम्भक रथिका, देखिये चित्र संख्या 18

****